माउंट आबू, 9 मई। प्रसिद्व कथावाचक आचार्य सुधांशु महाराज ने कहा है कि जब तक राष्ट्र में अशांति व्याप्त है तब तक उसका समग्र विकास व नवनिर्माण नहीं हो सकता। यह बात उन्होंने गुरूवार सांय ब्रह्माकुमारी संस्थान के अंतराष्ट्रीय मुख्यालय पाण्डव भवन स्थित ओम शांति भवन के सभागार आयोजित आध्यात्मिक स्नेह मिलन समारोह में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि हर मनुष्य शांति का जिज्ञासु है। ओम शांति के महामंत्र की गहराई में जाने से असीम शांति का अनुभव किया जा सकता है। शांति के लिए कहीं भटकने की जरूरत नहीं है बल्कि स्वयं की वास्तविकता को समझते हुए हर परिस्थिति में शांति का अनुभूति की जा सकती है। इसके लिए स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा से संबंध जोड़ते हुए उससे शक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता है। जिससे अपने अंदर मौजूद आसुरी शक्तियों का संहार हो जाने से जीवन में स्थाई रूप से शांति का समावेश संभव है। वर्तमान तनावजन्य परिवेश में मानव समुदाय संताप, क्रोध, अनावश्यक कामनाओं के साथ विभिन्न प्रकार की मानसिक व्याधियों की अग्नि से पीड़ाग्रस्त है। ऐसी परिस्थितियों में आध्यात्मिक प्रेमियों का उन्हें सच्ची शांति प्रदान करने का प्राथमिक कर्त्तव्य बनता है। उन्होंने प्रभात के समय का महत्व बताते हुए कहा कि अमृतवेले जो अध्यात्मिक विभूतियां परमात्मा की याद में अपने मानसिक धरातल को शुद्व विचारों से परिपूर्ण करती हैं उनके मन से निकलने वाली तरंगे प्रकृति के पांचों तत्वों समेत विश्व की सर्व आत्माओं को शांति का अनुभव कराने में सक्षम होती हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि भारत की अध्यात्मिकता विश्व को सही दिशा देने में अहम स्थान रखती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के अुनरूप वसुधैव कुटुम्बक की भावनाओं के मंत्र को मूर्तरूप देने के लिए सृष्टि के रचता व उसकी रचना के ज्ञान को गहराई से समझने की जरूरत है। जब तक मनुष्य ने अपने सत्यस्वरूप को नहीं जाना तब तक एक दूसरे के प्रति सकारात्मक व निस्वार्थ भावनाएं जागृत नहीं होंगी। समूचा विश्व एक परिवार की तरह है, सभी एक परमपिता परमात्मा की सन्तानें हैं, इस प्रकार की मनोवृत्ति रखने से ही विश्वकल्याण संभव है।

नगरपालिका अध्यक्ष जालमगिरी ने कहा कि माउंट आबू संत महात्माओं की तपस्थली है। यहां पर ऋर्षि-महिर्षियों की ओर से की जा रही तपस्या के वायब्रेशन निसंदेह ही आने वाले लोगों को शांति की गहन अनुभूति करवाते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान की ओर से विश्व के 130 देंशों में निस्वार्थ रूप से शांति स्थापन करने का कार्य पूरे विश्व को शांति प्रदान करेगा। यह माउंट आबू वासियों का सौभाग्य है कि यहां इस संस्थान का अंतराष्ट्रीय मुख्यालय है। जहां विश्व के कोने कोने से साधक अपने ऊंच विचारों से जनता को लाभान्वित करने के लिए आते हैं।

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आध्यात्मिकता मनुष्य की सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर एक दूसरे के प्रति स्नेहिल भावनाओं को पैदा करती है। वर्तमान प्रकृति की सांकेतिक भाषा को समझकर अपने मन का शुद्धिकरण करते हुए अध्यात्मिकता को जीवन का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। शुद्ध मन वाला व्यक्ति विश्व में शांति स्थापन करने के कार्य में सहयोगी बन सकता है।

मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके करूणा भाई ने कहा कि सभी संत महात्माओं के ऊपर दुनिया की नजर है कि विश्व में अब शांति स्थापन करने का समय आ पहुंचा है, इस कार्य के लिए विभिन्न अध्यात्मिक संगठनों को एकमत होकर आगे आना चाहिए। प्रकृति के तत्व भी सचेत कर रहे हैं कि विश्व परिवर्तन की घड़ी आ पहुंची है। इसलिए प्रकृति के अचानक और एवरेडी के मंत्र को ध्यान में रखते हुए भयावह घटनाओं का सामना करने के लिए अपनी मनोस्थिति को मजबूत बनाना होगा। इस अवसर पर संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युजंय, खेलकूद प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके शशि बहन समेत विभिन्न वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर प्रसिद्व कथावाचक आचार्य सुधांशु महाराज ने पाण्डव भवन का भी अवलोकन किया। आचार्य ने बाबा की समाधि शांति सतंभ पर जाकर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित श्रद्धाजंलि दी। वहां अंकित विश्व शांति एवं मानवीय एकता के लिए बाबा के महावाक्यों की विस्तारपूर्वक जानकारी लेते हुए उन्हें विश्व कल्याण के लिए मूल्यवान बताया। वे बाबा की उस कुटिया में भी गए जहां उन्होंने अपने जीवन काल का अधिकाशंतः समय तपस्या, संगठन की गतिविधियों को विकास के आयाम देने वाले कार्यों को संचालित करने में बिताया था। उन्होंने ऐतिहासिक सभागृह का भी अवलोकन किया। विश्वव्यापी आध्यात्मिक संस्थान की गतिविधियों को नजदीकी से देख उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस कार्य को प्रशंसनीय बताया। आचार्य ने ज्ञान सरोवर, ग्लोबल अस्पताल, शांतिवन परिसर का भी अवलोकन किया।